पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

रचनाकार :-
........**नफे सिंह योगी**........

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था

www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाधाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - नफे सिंह योगी

विश्वास का टूटता आईना-

वैवाहिक रिश्तों में विश्वासघात और उसका दुष्परिणाम

विश्वास का टूटता आईना : वैवाहिक रिश्तों में विश्वासघात और उसका दुष्परिणाम

मानव सभ्यता के आरंभ से ही विश्वास वह अदृश्य सूत्र रहा है, जिसने व्यक्ति को व्यक्ति से, आत्मा को आत्मा से और समाज को समाज से बाँधे रखा है। विश्वास दिखाई नहीं देता, फिर भी उसके बिना कोई संबंध अपना अर्थ नहीं रखता। परिवार इसी विश्वास की नींव पर खड़ा हुआ और विवाह उस नींव का सबसे संवेदनशील, सबसे गहरा और सबसे उत्तरदायित्वपूर्ण रूप है। विवाह केवल दो व्यक्तियों का सामाजिक या कानूनी बंधन नहीं, बल्कि दो जीवन यात्राओं का ऐसा मिलन है, जिसमें सुख-दुःख, आशा-निराशा, संघर्ष सफलता और भविष्य की अनगिनत संभावनाएँ एक-दूसरे से जुड़ जाती हैं।

इसीलिए जब वैवाहिक जीवन में विश्वासघात प्रवेश करता है, तो टूटता केवल एक रिश्ता नहीं, बल्कि उस रिश्ते से जुड़े अनेक विश्वासों का संसार भी बिखर जाता है। कभी-कभी यह टूटन अलगाव, मानसिक पीड़ा या तलाक तक सीमित रहती है, लेकिन जब अविश्वास, क्रोध, नकारात्मकता, प्रतिशोध और हिंसा अपनी चरम सीमा पर पहुँचते हैं, तब परिणाम इतना भयावह हो सकता है कि एक जीवन हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है। हत्या जैसी घटनाएँ केवल अपराध की घटनाएँ नहीं होतीं; वे उस विश्वास की मूक हत्या भी होती हैं, जिसके सहारे दो मनुष्यों ने कभी साथ चलने का निर्णय लिया था।

आज वैवाहिक संबंधों में विश्वासघात और उसके कारण होने वाली हिंसक घटनाएँ समाज के सामने एक गंभीर प्रश्न बनकर खड़ी हैं। समाचार माध्यमों में पति द्वारा पत्नी की हत्या, पत्नी द्वारा पति के विरुद्ध घातक कदम, विवाहेतर संबंधों को लेकर हिंसा, संपत्ति और धन के विवाद, दहेज, मानसिक प्रताड़ना तथा संदेह के कारण होने वाली घटनाएँ समय-समय पर सामने आती रहती हैं। इन घटनाओं को देखकर समाज अक्सर तत्काल दोषी खोजने लगता है, लेकिन किसी भी गंभीर सामाजिक समस्या को केवल अपराधी और अपराध तक सीमित कर देना उसके वास्तविक कारणों को समझने से बचना है।

किसी भी घटना के पीछे एक लंबी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रक्रिया हो सकती है। कई बार अपराध अचानक दिखाई देता है, परंतु उसके भीतर वर्षों से जमा अविश्वास, अपमान, असंतोष, संवादहीनता, आर्थिक तनाव, अकेलापन, ईर्ष्या, सामाजिक दबाव या भावनात्मक दूरी काम कर रही होती है। जिस रिश्ते में कभी दो लोग अपने मन की सबसे छोटी बात भी साझा करते थे, उसी रिश्ते में एक दिन ऐसा क्यों आता है कि दोनों एक-दूसरे से अपने मन की सबसे बड़ी बात छिपाने लगते हैं? यही प्रश्न इस समस्या के केंद्र में है।

किसी भी मानवीय संबंध की आधारशिला संवाद है। संवाद केवल बोलना नहीं, बल्कि दूसरे को सुनना भी है। वैवाहिक जीवन में जब संवाद समाप्त होने लगता है, तब मौन धीरे-धीरे दीवार बन जाता है। पति अपनी परेशानियाँ पत्नी से नहीं कहता, पत्नी अपनी पीड़ा पति से साझा नहीं करती। दोनों एक ही घर में रहते हुए भी भावनात्मक रूप से अलग-अलग संसारों में रहने लगते हैं। बाहर से परिवार सामान्य दिखाई दे सकता है, लेकिन भीतर संबंधों में दरारें गहरी होती जाती हैं।

यह दरार एक दिन में पैदा नहीं होती। छोटी-छोटी उपेक्षाएँ, बार-बार की अनसुनी बातें, अपमानजनक शब्द, अविश्वास, तुलना, ताने, आर्थिक असमानता, भावनात्मक उपेक्षा और लगातार बढ़ता तनाव मिलकर उस दरार को चौड़ा करते जाते हैं। जब व्यक्ति को यह अनुभव होने लगे कि उसके मन की कोई कीमत नहीं, उसकी पीड़ा कोई नहीं सुनता और उसकी भावनाओं को कोई समझना नहीं चाहता, तब भीतर एक ऐसी रिक्तता जन्म लेती है, जिसे वह किसी अन्य सहारे से भरने की कोशिश कर सकता है।

विवाहेतर संबंधों की चर्चा इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण हो जाती है। प्रत्येक विवाहेतर आकर्षण का कारण केवल चरित्रहीनता या वासना मान लेना समस्या को बहुत सरल बना देना है। कई बार उसके पीछे भावनात्मक खालीपन, उपेक्षा, अकेलापन और स्वीकार किए जाने की इच्छा भी हो सकती है। इसका अर्थ यह नहीं कि विश्वासघात उचित हो जाता है। विश्वासघात का कोई भी रूप वैवाहिक संबंध की गरिमा को चोट पहुँचाता है। लेकिन कारणों को समझे बिना केवल परिणाम को देखकर निर्णय देना समस्या की जड़ तक नहीं पहुँचाता।

कभी-कभी व्यक्ति को अपने जीवनसाथी से वह सम्मान, अपनापन या भावनात्मक सुरक्षा नहीं मिलती, जिसकी उसे आवश्यकता होती है। बाहर से मिलने वाला ध्यान उसे आकर्षित करता है और धीरे-धीरे वह भावनात्मक दूरी विवाहेतर संबंध का रूप ले सकती है। डिजिटल युग ने इस संभावना को और जटिल बना दिया है। सोशल मीडिया, चैट ऐप्स और ऑनलाइन संपर्क ने संवाद को अत्यंत आसान बना दिया है। दूरी अब संबंधों के लिए बड़ी बाधा नहीं रही। किसी अनजान व्यक्ति से बातचीत कुछ ही क्षणों में निकटता का रूप ले सकती है।

लेकिन तकनीक स्वयं दोषी नहीं है। तकनीक केवल माध्यम है, उसका उपयोग व्यक्ति की मानसिकता और संबंधों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। जिस मोबाइल फोन से पति-पत्नी एक-दूसरे की तस्वीर देखकर मुस्करा सकते हैं, उसी से कोई अपने जीवनसाथी से छिपकर किसी दूसरे संबंध को भी जन्म दे सकता है। समस्या उपकरण में नहीं, उस मनोवृत्ति में है जो पारदर्शिता की जगह गोपनीयता, विश्वास की जगह छल और संवाद की जगह छिपाव को चुनती है।

अविश्वास का सबसे खतरनाक रूप संदेह है। संदेह जब प्रमाण की खोज तक सीमित रहता है, तब वह प्रश्न बन सकता है; लेकिन जब वह मन पर अधिकार कर लेता है, तब वह व्यक्ति को वास्तविकता से दूर ले जाता है। फोन किसका था, संदेश किसने भेजा, देर से घर क्यों आए, किससे बात कर रहे थे, किसके साथ दिखाई दिए, ऐसे प्रश्न यदि संवाद का हिस्सा हों तो सामान्य हैं, लेकिन जब हर गतिविधि पर निगरानी और हर व्यवहार में शक दिखाई देने लगे, तब संबंध धीरे-धीरे प्रेम से निकलकर नियंत्रण में बदल जाता है।

प्रेम और स्वामित्व में यही सबसे बड़ा अंतर है। प्रेम दूसरे के अस्तित्व का सम्मान करता है, जबकि स्वामित्व उसे अपनी वस्तु मानने लगता है। “यदि वह मेरी नहीं हो सकती, तो किसी की भी न हो”, यह वाक्य प्रेम का नहीं, विकृत अधिकार-बोध का प्रतीक है। किसी मनुष्य को अपनी संपत्ति समझना उसके व्यक्तित्व, स्वतंत्रता और जीवन के अधिकार का अपमान है। जो प्रेम बाँधता है, वह अंततः नारकीय बन जाता है; जो प्रेम सम्मान देता है और स्वतंत्रता में विश्वास करता है, वही मानवीय संबंध को ऊँचाई देता है।

कई वैवाहिक अपराधों के पीछे यही विकृत मानसिकता दिखाई देती है। व्यक्ति अपने जीवनसाथी को खोने के भय से इतना ग्रस्त हो जाता है कि संबंध समाप्त होने की संभावना को स्वीकार नहीं कर पाता। वह समझता है कि यदि विवाह नहीं बच सकता तो जीवनसाथी को भी जीवित रहने का अधिकार नहीं होना चाहिए। यह सोच केवल अपराध नहीं, मनुष्य के अस्तित्व के प्रति घोर असम्मान है। किसी रिश्ते का अंत जीवन का अंत नहीं होना चाहिए।

दुर्भाग्य से समाज में आज भी विवाह को कई बार जीवन का अंतिम और अपरिवर्तनीय निर्णय मानकर देखा जाता है। विवाह टूटना सामाजिक असफलता समझा जाता है। तलाक लेने वाले स्त्री या पुरुष को कई बार ऐसी दृष्टि से देखा जाता है मानो उसने कोई अपराध कर दिया हो। इसी सामाजिक दबाव के कारण अनेक लोग टूटे हुए रिश्ते में वर्षों तक घुटते रहते हैं। वे न तो खुलकर अपनी समस्या कह पाते हैं और न ही सम्मानजनक तरीके से अलग होने का निर्णय ले पाते हैं।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि हर विवाह को बचाना ही नैतिक सफलता नहीं है। यदि किसी संबंध में लगातार हिंसा, अपमान, भय, मानसिक प्रताड़ना या विश्वास का पूर्ण विनाश हो चुका है, तो कभी-कभी सम्मानजनक अलगाव ही दोनों के लिए बेहतर विकल्प हो सकता है। एक रिश्ता समाप्त हो सकता है, लेकिन किसी मनुष्य का जीवन समाप्त करना किसी भी परिस्थिति में समाधान नहीं हो सकता।

वैवाहिक विश्वासघात के पीछे आर्थिक कारण भी कई बार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संपत्ति, बीमा, उत्तराधिकार, धन-संपदा, व्यापारिक विवाद और आर्थिक निर्भरता से जुड़े संघर्ष संबंधों को विषाक्त बना सकते हैं। जब रिश्ते का मूल्य व्यक्ति से अधिक उसकी संपत्ति से तय होने लगे, तब प्रेम धीरे-धीरे लेन-देन में बदल जाता है। धन जीवन का साधन है, साध्य नहीं। यदि धन के लिए मनुष्य ही साधन बन जाए, तो समृद्धि के बीच भी मनुष्य भीतर से दरिद्र हो जाता है।

भारतीय समाज की अपनी सामाजिक जटिलताएँ भी हैं। विवाह केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं माना जाता, बल्कि दो परिवारों का मिलन समझा जाता है। यह दृष्टि अपने भीतर सामूहिकता और पारिवारिक सहयोग की सुंदर भावना रखती है, लेकिन जब परिवार का दबाव व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा और सम्मान से बड़ा हो जाए, तब यही व्यवस्था बोझ बन सकती है। “लोक-लाज” के नाम पर कितने ही लोग अपनी पीड़ा छिपाते हैं और कितने ही परिवार समस्या को स्वीकार करने के बजाय उसे दबाने की कोशिश करते हैं।

पितृसत्तात्मक सोच भी वैवाहिक विश्वास को प्रभावित करती है। जहाँ पति को स्वामी और पत्नी को सेविका समझा जाता है, वहाँ समानता और साझेदारी की भावना जन्म ही नहीं ले पाती। विवाह में किसी एक का अधिकार और दूसरे का दायित्व नहीं होना चाहिए। पति-पत्नी दोनों मनुष्य हैं, दोनों की भावनाएँ हैं, दोनों की आकांक्षाएँ हैं और दोनों की गरिमा समान है। जहाँ सम्मान एकतरफा हो, वहाँ विश्वास टिकाऊ नहीं हो सकता।

दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियाँ भी विवाह को आर्थिक लेन-देन में बदल देती हैं। जब विवाह की शुरुआत ही अपेक्षाओं, मांगों और तुलना से हो, तो संबंध में सहजता कहाँ से आएगी? दहेज के कारण होने वाली प्रताड़ना, घरेलू हिंसा और मानसिक उत्पीड़न केवल एक व्यक्ति को नहीं तोड़ते, बल्कि पूरे परिवार की आत्मा को घायल करते हैं। किसी बेटी को विवाह के बाद यह अनुभव होना कि उसके अस्तित्व का मूल्य उसके साथ आए सामान से निर्धारित होता है, विश्वास की सबसे बड़ी विडंबना है।

मानसिक प्रताड़ना कई बार शारीरिक हिंसा से भी अधिक लंबे समय तक असर डालती है। अपमान, लगातार ताने, चरित्र पर संदेह, आर्थिक नियंत्रण, सामाजिक अलगाव, बातचीत बंद कर देना और भावनात्मक उपेक्षा, ये सभी ऐसे व्यवहार हैं जो धीरे-धीरे व्यक्ति के आत्मसम्मान को क्षीण कर सकते हैं। बाहर से कोई चोट दिखाई नहीं देती, लेकिन भीतर व्यक्ति टूटता जाता है। मानसिक पीड़ा को अदृश्य समझना उसकी गंभीरता को कम करना है।

मानसिक स्वास्थ्य की अनदेखी भी वैवाहिक संकट को गंभीर बना सकती है। अवसाद, चिंता, असुरक्षा, अत्यधिक क्रोध, हीनभावना और भावनात्मक असंतुलन यदि लंबे समय तक अनदेखे रहें, तो व्यक्ति के निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। दुर्भाग्य यह है कि हमारे समाज में मानसिक स्वास्थ्य पर बातचीत आज भी कई जगह संकोच का विषय है। शरीर के दर्द के लिए चिकित्सक के पास जाना सहज माना जाता है, लेकिन मन के दर्द को अक्सर कमजोरी कहकर टाल दिया जाता है।

क्रोध स्वयं हमेशा बुरा नहीं है, अन्याय या पीड़ा पर प्रतिक्रिया स्वाभाविक है। लेकिन अनियंत्रित क्रोध विवेक को ढक देता है। क्षणिक आवेश में लिया गया निर्णय वर्षों के जीवन को समाप्त कर सकता है। इसलिए किसी भी वैवाहिक विवाद को उस बिंदु तक पहुँचने से पहले रोकना आवश्यक है जहाँ संवाद की जगह हिंसा ले ले। क्रोध के क्षण में कुछ समय की दूरी कई बार जीवन बचा सकती है।

समस्या का एक दूसरा पक्ष यह भी है कि समाज अक्सर पुरुष की भावनात्मक पीड़ा को गंभीरता से नहीं लेता। पुरुष से बचपन से ही मजबूत बने रहने की अपेक्षा की जाती है। उसे रोने, डर व्यक्त करने, असुरक्षा स्वीकार करने या भावनात्मक सहायता लेने में संकोच कराया जाता है। परिणामस्वरूप वह अपनी पीड़ा भीतर दबाता रहता है। यह दबाव किसी भी व्यक्ति के लिए घातक हो सकता है। भावनाएँ स्त्री या पुरुष की संपत्ति नहीं; वे मनुष्य होने का स्वाभाविक हिस्सा हैं।

इसी प्रकार महिलाओं की पीड़ा को भी केवल घरेलू विवाद मानकर टाल देना खतरनाक है। विवाह में सम्मान, सुरक्षा और निर्णय लेने की स्वतंत्रता किसी भी स्त्री का अधिकार है। यदि उसे लगातार अपमानित किया जाता है, हिंसा का सामना करना पड़ता है या उसकी आवाज दबाई जाती है, तो उससे चुप रहने की अपेक्षा करना समस्या को बढ़ाना है। समानता का अर्थ किसी एक पक्ष को दूसरे के विरुद्ध खड़ा करना नहीं, बल्कि दोनों को समान मनुष्य मानना है।

वैवाहिक संबंधों को बचाने में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण है। परिवार केवल संकट के समय फैसला सुनाने वाली संस्था न बने, बल्कि ऐसी जगह बने जहाँ व्यक्ति बिना भय अपनी बात कह सके। कई बार पति-पत्नी के बीच समस्या बहुत बड़ी नहीं होती, लेकिन परिवार के हस्तक्षेप का तरीका उसे बड़ा बना देता है। पक्ष लेने, आरोप लगाने और अपमानित करने के बजाय समझने और संवाद का वातावरण बनाया जाए तो कई रिश्तों में आई दरार गहरी होने से बच सकती है।

बच्चों पर भी वैवाहिक वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चे केवल माता-पिता की बातें नहीं सुनते, वे उनके व्यवहार को देखते हैं। यदि घर में सम्मान, संवाद और सहयोग है तो बच्चा संबंधों को स्वस्थ रूप में समझता है। यदि घर में लगातार झगड़ा, हिंसा, अपमान और भय है, तो उसके व्यक्तित्व पर उसका प्रभाव पड़ता है। इसलिए वैवाहिक संबंध केवल दो व्यक्तियों का निजी मामला होते हुए भी अगली पीढ़ी के निर्माण से जुड़ा हुआ विषय है।

शिक्षा की भूमिका भी यहाँ अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा का अर्थ केवल डिग्री और रोजगार नहीं है। वास्तविक शिक्षा व्यक्ति को संवेदनशील बनाती है। उसे सिखाती है कि असहमति शत्रुता नहीं है, क्रोध हिंसा का अधिकार नहीं देता, प्रेम स्वामित्व नहीं है और किसी संबंध का टूटना किसी मनुष्य के जीवन के समाप्त होने का कारण नहीं हो सकता। यदि बच्चों को प्रारंभ से ही भावनात्मक सम्मान, संवाद, सहमति, जिम्मेदारी और संघर्ष-समाधान की समझ दी जाए, तो भविष्य के संबंध अधिक स्वस्थ हो सकते हैं।

समाज को विवाह के बारे में अपनी धारणाओं पर भी विचार करना होगा। विवाह कोई ऐसी परीक्षा नहीं जिसमें हर कीमत पर साथ बने रहना ही सफलता हो। विवाह साझेदारी है। इसमें दोनों पक्षों का सम्मान, विश्वास और स्वतंत्र व्यक्तित्व आवश्यक है। कभी-कभी दो अच्छे मनुष्य भी एक साथ अच्छे जीवनसाथी नहीं बन पाते। ऐसी स्थिति में अलग होना असफलता नहीं, बल्कि परिपक्व निर्णय भी हो सकता है, बशर्ते वह सम्मान और विवेक के साथ लिया जाए।

कानून की भूमिका इस पूरे प्रश्न में महत्वपूर्ण है। अपराध होने के बाद कानून दोषी को दंड दे सकता है, न्याय की प्रक्रिया आगे बढ़ा सकता है और समाज को यह संदेश दे सकता है कि हिंसा स्वीकार्य नहीं है। लेकिन कानून किसी मृत व्यक्ति को वापस जीवन नहीं दे सकता। वह टूटे परिवार को पहले जैसा नहीं बना सकता। इसलिए केवल कठोर दंड की चर्चा पर्याप्त नहीं है। अपराध घटित होने से पहले सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर हस्तक्षेप अधिक महत्वपूर्ण है।

विवाह परामर्श केंद्र, परिवार परामर्श सेवाएँ, मानसिक स्वास्थ्य सहायता, कानूनी सलाह और सम्मानजनक वैवाहिक मध्यस्थता ऐसे माध्यम हो सकते हैं जो संकट को चरम स्थिति तक पहुँचने से रोकें। यदि पति-पत्नी समय रहते सहायता ले सकें, तो कई विवादों को समझदारी से सुलझाया जा सकता है। जहाँ संबंध बचाया जा सकता है, वहाँ संवाद उसे बचा सकता है, और जहाँ संबंध बचाना संभव न हो, वहाँ सभ्य अलगाव दोनों जीवनों को विनाश से बचा सकता है।

मीडिया की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। वैवाहिक अपराधों की सनसनीखेज प्रस्तुति समाज में भय और उत्तेजना पैदा करती है, लेकिन समस्या के मूल कारणों पर प्रकाश कम डालती है। किसी घटना को केवल “खौफनाक कहानी” बना देना उस त्रासदी की गंभीरता को मनोरंजन में बदल सकता है। मीडिया यदि अपराध के कारणों, मानसिक स्वास्थ्य, घरेलू हिंसा, कानूनी सहायता और समाधान के रास्तों पर भी चर्चा करे, तो उसकी भूमिका अधिक जिम्मेदार और समाजोपयोगी हो सकती है।

सोशल मीडिया के युग में निजी जीवन की सीमाएँ भी धुंधली हुई हैं। दूसरों के जीवन को देखकर अपने विवाह की तुलना करना, आभासी दुनिया में आदर्श रिश्तों की तस्वीरों से वास्तविक जीवन को तौलना और लगातार डिजिटल मान्यता की तलाश करना व्यक्ति में असंतोष पैदा कर सकता है। हर मुस्कुराती तस्वीर के पीछे सुखी जीवन हो, यह आवश्यक नहीं। वास्तविक संबंध कैमरे के सामने नहीं, जीवन की कठिन परिस्थितियों में एक-दूसरे के साथ खड़े होने से मजबूत होते हैं।

विश्वास कोई ऐसा अनुबंध नहीं जिसे एक बार हस्ताक्षर करने के बाद जीवनभर के लिए सुरक्षित मान लिया जाए। विश्वास प्रतिदिन निर्मित होता है। एक सत्य बोलने से, एक कठिन समय में साथ खड़े होने से, एक गलती स्वीकार करने से, दूसरे की बात सुनने से और उसकी अनुपस्थिति में भी उसके सम्मान की रक्षा करने से विश्वास मजबूत होता है। उसी तरह एक झूठ, एक छल, एक अपमान या एक छिपा हुआ विश्वासघात वर्षों में बने भरोसे को क्षण भर में कमजोर कर सकता है।

विश्वास का टूटना आईने के टूटने जैसा है। आईना टूट जाए तो उसमें चेहरा अनेक टुकड़ों में दिखाई देता है। टुकड़े जोड़ भी दिए जाएँ, तो दरारों के निशान रह जाते हैं। वैवाहिक विश्वास भी ऐसा ही है। क्षमा संभव है, पुनर्निर्माण संभव है, लेकिन पुराने विश्वास की सहजता वापस आने में समय लगता है। इसलिए विश्वास को टूटने से बचाना उसके टूटने के बाद उसे जोड़ने से कहीं अधिक सरल और मानवीय है।

फिर भी मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति उसकी पुनर्निर्माण क्षमता है। हर टूटा रिश्ता हिंसा में समाप्त नहीं होता। अनेक दंपति कठिन परिस्थितियों से गुजरकर अपने संबंधों को फिर से मजबूत करते हैं। वे अपनी गलतियों को स्वीकार करते हैं, संवाद शुरू करते हैं, सीमाएँ तय करते हैं और धीरे-धीरे विश्वास पुनः अर्जित करते हैं। जहाँ दोनों पक्ष ईमानदारी से प्रयास करना चाहते हैं, वहाँ संबंधों को नया जीवन मिल सकता है।

लेकिन जहाँ विश्वास पूरी तरह समाप्त हो चुका हो, हिंसा लगातार जारी हो या साथ रहना जीवन के लिए खतरा बन जाए, वहाँ अलगाव को भी सम्मानजनक विकल्प मानना होगा। किसी व्यक्ति के साथ जीवन बिताने का अधिकार है, लेकिन किसी व्यक्ति के जीवन पर अधिकार नहीं। यह अंतर जितनी जल्दी समाज समझेगा, वैवाहिक हिंसा की अनेक संभावनाएँ उतनी ही जल्दी समाप्त होंगी।

यह भी समझना जरूरी है कि कुछ भयावह घटनाओं के आधार पर पूरे वैवाहिक जीवन या पूरे समाज को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। हमारे आसपास आज भी लाखों परिवार ऐसे हैं जहाँ पति-पत्नी कठिनाइयों के बावजूद एक-दूसरे का सम्मान करते हैं, साथ संघर्ष करते हैं, बच्चों का भविष्य बनाते हैं और उम्र के साथ अपने रिश्ते को और गहरा करते हैं।

विश्वासघात की घटनाएँ जितनी भयावह हैं, उतना ही महत्वपूर्ण उन अनगिनत स्वस्थ रिश्तों को देखना भी है जो बिना किसी शोर के समाज की नींव मजबूत कर रहे हैं।

एक सभ्य समाज की पहचान केवल ऊँची इमारतों, आधुनिक तकनीक, आर्थिक विकास या तेज गति से बदलती जीवनशैली से नहीं होती। उसकी वास्तविक पहचान इस बात से होती है कि वहाँ मनुष्य दूसरे मनुष्य के जीवन और सम्मान को कितना महत्व देता है। यदि घर सुरक्षित नहीं, यदि जीवनसाथी के साथ संवाद संभव नहीं, यदि असहमति हिंसा में बदल जाती है और यदि प्रेम अधिकार में बदल जाता है, तो बाहरी विकास के बावजूद भीतर कहीं गहरी कमी बनी रहती है।

विवाह का अर्थ यह नहीं कि दो लोग एक-दूसरे के जीवन के मालिक बन जाएँ। विवाह का अर्थ है, दो स्वतंत्र व्यक्तित्वों का स्वेच्छा से एक साझा जीवन रचना। इसमें अधिकार हैं तो उत्तरदायित्व भी हैं; अपेक्षाएँ हैं तो त्याग भी है; निकटता है तो व्यक्तिगत सम्मान भी है। सबसे महत्वपूर्ण यह कि इसमें प्रेम है, लेकिन प्रेम के साथ विवेक भी होना चाहिए।

अंततः प्रश्न केवल यह नहीं है कि पति ने पत्नी को क्यों मारा या पत्नी ने पति के विरुद्ध इतना घातक कदम क्यों उठाया। बड़ा प्रश्न यह है कि वह विश्वास कहाँ खो गया, जिसने कभी दो अपरिचित मनुष्यों को जीवनभर का साथी बना दिया था?

विवाह की शुरुआत अक्सर विश्वास से होती है। दो लोग एक-दूसरे को अपने भविष्य का हिस्सा बनाते हैं। वे अपने सुख साझा करते हैं, अपने दुःख सौंपते हैं और धीरे-धीरे एक-दूसरे के जीवन की आदत बन जाते हैं। लेकिन रिश्ते अचानक नहीं टूटते। पहले बातचीत कम होती है, फिर मन की बातें छिपने लगती हैं, फिर शिकायतें जमा होती हैं, फिर संदेह जन्म लेता है और अंततः वही घर, जो कभी सुरक्षा का स्थान था, तनाव का केंद्र बन जाता है।

इसलिए वैवाहिक विश्वासघात की समस्या को केवल विवाहेतर संबंध, धन, संपत्ति या अपराध की दृष्टि से देखना पर्याप्त नहीं है। इसके पीछे मनुष्य की भावनात्मक जरूरतें, सामाजिक दबाव, असमानता, संवादहीनता, स्वामित्व की मानसिकता और मानसिक स्वास्थ्य जैसे अनेक स्तर जुड़े हुए हैं। किसी एक कारण को पकड़कर पूरी समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता।

सबसे पहले आवश्यकता उस सोच को बदलने की है जिसमें प्रेम को अधिकार समझा जाता है। किसी को प्रेम करना और किसी पर अधिकार जमाना दो अलग बातें हैं। प्रेम में दूसरे की स्वतंत्रता के लिए स्थान होता है। प्रेम दूसरे के निर्णय को सुनता है। प्रेम असहमति में भी सम्मान बनाए रखता है। और यदि कभी रास्ते अलग हो जाएँ, तो भी दूसरे के जीवन को नष्ट करने की इच्छा नहीं रखता।

रिश्ता समाप्त हो सकता है, जीवन नहीं।

यह एक साधारण वाक्य नहीं, बल्कि वैवाहिक संबंधों की सबसे महत्वपूर्ण मानवीय मर्यादा है। किसी भी विवाद, अपमान, विश्वासघात या अलगाव से बड़ा मनुष्य का जीवन है। जिस क्षण कोई व्यक्ति यह भूल जाता है, उसी क्षण प्रेम की जगह हिंसा जन्म लेती है।

समाज को भी यह स्वीकार करना होगा कि हर टूटे विवाह को बचाना जरूरी नहीं, लेकिन हर जीवन को बचाना जरूरी है। कभी-कभी साथ रहना समाधान नहीं होता और अलग होना ही शांति का रास्ता बन जाता है। सम्मानपूर्वक लिया गया अलगाव दो जीवनों को बचा सकता है, जबकि हिंसा दो परिवारों को जीवनभर के दुःख में धकेल देती है।

कानून अपराधी को दंड दे सकता है, लेकिन वह उस व्यक्ति को वापस नहीं ला सकता जिसकी साँसें हमेशा के लिए थम चुकी हैं। अदालत फैसला दे सकती है, लेकिन किसी बच्चे के मन से माता-पिता को खोने का दर्द नहीं मिटा सकती। समाज अपराध की निंदा कर सकता है, लेकिन उस घर की खामोशी वापस नहीं ला सकता जहाँ कभी हँसी गूँजती थी। इसलिए वास्तविक सफलता अपराध के बाद दंड देने में नहीं, अपराध से पहले उस स्थिति को पहचान लेने में है जहाँ संबंध विनाश की ओर बढ़ रहा हो।

मीडिया, परिवार, शिक्षा, कानून और समाज—सभी की अपनी-अपनी भूमिका है; लेकिन अंततः किसी रिश्ते का सबसे मजबूत प्रहरी स्वयं पति-पत्नी के भीतर मौजूद संवेदनशील मनुष्य है। यदि वे एक-दूसरे को सुन सकें, सम्मान दे सकें, अपनी गलतियों को स्वीकार कर सकें और आवश्यकता पड़ने पर सहायता लेने में संकोच न करें, तो बहुत-सी दरारें गहरी होने से पहले भर सकती हैं।

और यदि किसी कारण से रिश्ता बचाना संभव न हो, तो अलग होने की सभ्यता सीखनी होगी। हर विदाई युद्ध नहीं होती। हर टूटन बदले की मांग नहीं करती। कभी-कभी दो लोग सम्मानपूर्वक अलग होकर भी अपने जीवन को बचा सकते हैं। यही परिपक्वता है और यही मनुष्यता भी।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि विश्वास किसी कागज पर लिखा हुआ शब्द नहीं, बल्कि वर्षों की साझा अनुभूति है। यह धीरे-धीरे बनता है और एक क्षण में टूट सकता है। इसलिए रिश्तों को बचाने के लिए बड़े-बड़े वादों से अधिक छोटी-छोटी ईमानदार आदतें जरूरी हैं, सच बोलना, सुनना, सम्मान करना, गलती मानना, संवाद बनाए रखना और दूसरे के अस्तित्व को अपने बराबर महत्व देना।

विवाह तभी सुंदर है जब उसमें दो मनुष्य साथ हों; एक स्वामी और दूसरा अधीनस्थ नहीं। परिवार तभी मजबूत है जब उसमें भय नहीं, विश्वास हो; मौन नहीं, संवाद हो; अधिकार नहीं, सम्मान हो; और संदेह नहीं, पारदर्शिता हो।

अंततः यह केवल पति-पत्नी का प्रश्न नहीं है। यह उस समाज का प्रश्न है जिसे हम आने वाली पीढ़ियों के लिए छोड़ना चाहते हैं। यदि बच्चे ऐसे घरों में बड़े होंगे जहाँ प्रेम का अर्थ सम्मान और असहमति का अर्थ संवाद होगा, तो वे अपने भविष्य के रिश्तों में हिंसा की जगह संवेदना चुनेंगे। लेकिन यदि वे प्रेम को अधिकार और क्रोध को शक्ति के रूप में देखेंगे, तो वही संस्कार आगे चलकर नई दरारों को जन्म देंगे। जीवन अमूल्य है। विश्वास दुर्लभ है। और हर मनुष्य अपने भीतर एक पूरा संसार लिए चलता है। किसी संबंध की विफलता उस संसार को समाप्त करने का अधिकार किसी को नहीं देती।

विश्वास का टूटता आईना हमें यही चेतावनी देता है कि रिश्तों में आई दरार केवल दो लोगों के बीच नहीं रहती; उसकी प्रतिध्वनि परिवार, बच्चों और पूरे समाज तक पहुँचती है। इसलिए टूटे हुए विश्वास को समझना, उसके कारणों को पहचानना और हिंसा से पहले संवाद का रास्ता खोलना समय की आवश्यकता है। टूटा हुआ विश्वास कठिनाई से जुड़ता है, लेकिन टूटा हुआ जीवन कभी नहीं जुड़ता।

आईना टूटे तो चेहरे पर दरार नहीं आती, लेकिन विश्वास टूटे तो रिश्तों का चेहरा बदल जाता है। और यदि उस दरार को समय रहते समझ लिया जाए, संवाद से भरा जाए और मनुष्य को रिश्ते से ऊपर रखा जाए, तो शायद बहुत-सी त्रासदियाँ होने से पहले ही रुक सकती हैं। क्योंकि अंत में मनुष्य किसी रिश्ते से बड़ा है, जीवन किसी भी विवाद से बड़ा है और मानवता, हर टूटे हुए विश्वास से बड़ी।

- नफे सिंह योगी

लेखक परिचय

नाम – नफे सिंह योगी

ग्राम - मालड़ा

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ...... **नफे सिंह योगी** ......जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।
उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...